डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 जून 2011 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब ✿ बानी

वर्ष - नौवां | अंक-दूसरा | जून-2011 | मासिक पत्रिका

4
अंधविश्वास
कबीर साहब की बानी
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी
16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

27
मन की आग
वारां - भाई गुरुदास जी
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी
16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया ।
फोन - 9950 55 66 71 (राजस्थान) व 9871 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार गुरमेल सिंह नौरिया फोन - 09928 92 53 04 व 09667 23 33 04

उप सम्पादक नंदिनी **अनुवादक** मास्टर प्रताप सिंह **सहयोग** रेनू सचदेवा व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 111 | Website : www.ajaibbani.org

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

अंधविश्वास

कबीर साहब की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

आपके आगे कबीर साहब का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। आप किसी भी सन्त–महात्मा की बानी पढ़कर देखें, किसी भी महात्मा ने बानी लिखते समय यह विचार नहीं किया कि दुनियां क्या कहेगी या हम पर नाराज़ हो जाएगी? सन्तों ने सच्चाई को बेधड़क होकर बयान किया है बेशक उन्हें बहुत कष्ट झेलने पड़े।

दुनियां में दो ताकतें काम करती हैं, एक काल और दूसरी दयाल है। एक मनमत है और दूसरी गुरुमत है। मुसलमानों में भी एक मोमिन और दूसरा काफिर है। मनमत में **अंधविश्वास** पर जोर दिया गया है। अंधविश्वास की बीमारी पढ़े लिखे–अनपढ़, शहरी–ग्रामीण सबमें है। अंधविश्वास हिन्दुस्तान में ही नहीं विदेशों में भी फैला हुआ है। पचास प्रसेन्ट से ज्यादा लोग अंधविश्वास में यकीन करते हैं।

हम कह देते हैं कि विदेशों में विज्ञान ने बहुत तरक्की की है ऐसा वही लोग कहते हैं जिन्होंने विदेशों में जाकर कुछ नहीं देखा। **अधंविश्वास** और मनमत हर जगह ही फैला हुआ है। कबीर साहब कहते हैं, ''हम उन लोगों पर बलिहार जाते हैं जिन्होंने अंधविश्वास फैलाया है। आज अंधविश्वास ने लोगों के दिल में इतना घर किया हुआ है अगर सन्त उन्हें जगाने की कोशिश करते हैं तो वे लोग सन्तों को मारने के लिए तैयार हो जाते हैं।'' गुरु नानकदेव, कबीर साहब और सभी सन्तों ने बुलंद आवाज़ में कहा है:

डर लागे और हँसी आवे।

जो लोग **अंधविश्वास** में हैं उन पर हँसी आती है और उनसे डर भी लगता है अगर सन्त सच कहते हैं तो उन लोगों को कड़वा लगता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बड़े महाराज जी एक कहानी सुनाया करते थे कि एक मरासी मस्ज़िद में गया, काज़ी ने उससे कहा कि तू सच बोला कर। वह मरासी एक घर से भिक्षा माँगने के लिए गया। उस घर का जट्ट एक औरत को भगाकर लाया था। मरासी ने उस औरत के सिर पर हाथ रखकर कहा, ''उदलदिए! तू मुझे पानी पिला।'' बात तो मरासी ने सच कही थी। जब जट्ट घर पर आया तो उस औरत ने जट्ट को बहुत भावुक तरीके से बताया तो जट्ट छुरी उठाकर मरासी को मारने के लिए चल पड़ा।

मरासी भागकर काज़ी के पास गया कि जट्ट मुझे मारने के लिए आ रहा है, तू मुझे उससे बचा क्योंकि तूने मुझसे सच बोलने के लिए कहा था। काज़ी ने कहा कि तू जिस तरह भी जट्ट से अपनी जान बचा सकता है बचा ले। अब मरासी ने अपनी कला का इस्तेमाल करते हुए जट्ट को खुश करने के लिए कहा, ''मेरा जजमान सत्यावान गाय करे दान।'' जट्ट अपनी बड़ाई सुनकर खुश हो गया और जट्ट ने उससे पूछा, ''तू मेरे घर पर उस लड़की को क्या कहकर आया है?'' मरासी ने कहा, ''मैं तेरे घर का कुत्ता हूँ मैंने भांग पी हुई थी, मैं भूखा हूँ।'' जट्ट मरासी को अपने घर ले आया और उस औरत से कहा कि इसने भांग पी हुई थी, यह भूखा है इसे खाना खिला।

मरासी ने काज़ी से कहा कि देख! झूठ बोलने से मेरी जान बच गई। सन्त संसार में आकर सच को बयान करते हैं। बड़े महाराज जी कहा करते थे अगर सन्त हमारे अंदर से एक भ्रम निकालते हैं तो हम और सैंकड़ों भ्रम डाल लेते हैं। मैं कबीर साहब का **अंधविश्वास** का यह शब्द इसलिए ले रहा हूँ क्योंकि मैं गुजरात, महाराष्ट्र में गया हूँ। राजस्थान के कोने–कोने में फिरा हूँ। मैंने ऐसे भी गाँव देखे हैं जहाँ पर लोग मौलवी या पंडित से पूछकर ही चारपाई से नीचे पाँव रखते हैं।

'नाम' जिम्मेवारी होती है। जिसके गले में कोई तावीज़ होता है या कोई भूत–प्रेतो को मानता है, ऐसे प्रेमियों को 'नाम' देने से पहले मैं कहता

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हूँ, ''लुकमान बहुत अच्छे हकीम थे मुर्दे को भी जिन्दा कर सकते थे लेकिन वहम का इलाज उनके पास भी नहीं था। अगर आपका भूत सच्चा है या जिस मढ़ी वाले को आप मानते हैं वह सच्चा है तो आप उसे आवाज़ दें मैं आपके पास ही बैठा हूँ। अब आपने **अंधविश्वास** नहीं करना आप अपने तावीज़ उतारकर दे दें।'' वे तावीज उतारकर हमारे सेवादारों को दे देते हैं हम उन तावीज़ों को फैंक देते हैं फिर भी उनमें से दो–चार आदमी ऐसे निकल आएंगे जो घर जाकर फिर तावीज़ पहन लेते हैं।

कुछ दिन पहले पंजाब से एक मियाँ–बीवी आए। उस लड़की की शादी ऐसे लड़के से हुई जो औलिया था। चेलो ने उसके सिर पर डंडे मार–मारकर उसके बाल उखाड़ रखे थे। उस लड़के का किसी सतसंगी के साथ मिलाप हुआ तो उसने 'नाम' ले लिया। उस लड़के की शादी एक पढ़ी–लिखी लड़की से साथ हुई। वह लड़की अपने घर में चार ईटें रखकर उसकी मढ़ी बनाकर पूजती और कहती यह माता रानी का मंदिर है। उस लड़के को यह अजीब लगा तो उसने कहा, ''हम सन्तों के पास चलते हैं।''

लड़की ने कहा कि बचपन से मेरे अंदर माता रानी प्रत्यक्ष है। मैंने उस लड़की से कहा कि तू अपने पति का सिर देख ले! चेलो ने इसके सिर पर बाल नहीं छोड़े। लड़के ने अपनी पीठ दिखाई जिस पर गरम सलाखों के निशान थे आखिर इसे 'नाम' मिला। यह दुखी था इसे तड़प थी इसने नाम की अच्छी कमाई की अब यह अच्छा अभ्यासी है।

मेरे पास दिन–रात ही ऐसे लोग आते हैं। मैं उन्हें कबीर साहब का शब्द सुनाकर कहता हूँ कि यह भी सेवा ही है। इस सतसंग में मैं आपको कुछ अपने साथ बीती हुई बातें, कुछ महाराज सावन सिंह जी की बातें भी बताऊँगा क्योंकि आप तो अपने सतसंगों में **अंधविश्वास** के बारे में बहुत ज्यादा सुनाया करते थे। आप महान थे आपका बहुत विशाल हृदय था।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

की मंगणा पीरां ने, मंगदे आपदी खातिर चेले, (2)

1. क्यों पूजे मढ़ियां नूं, छड्डके जिंदा राम नूं बंदया,
अंत समय न आवे तेरे कम, छड्डके जिंदा राम नूं बंदया, (2)
बंदया की तैनूं तारुगा, जेहड़ा आप काल ने फंदया,
कर सिमरन सतगुरु दा, आवे कम्म अंत दे वेले, की मंगणा....

2. फिर लालां वाले नूं, खांदा रोट किसे न वेखया,
जा विच निगाहे दे, मत्था कई वार है टेकया, (2)
आ विच मुसीबत दे, दर्शन कदे न दित्ते अकेले, की मंगणा....

3. सब पूजन बासड़िऐ, बहुती मेलेयां ते है जांदी,
जो थम लै आंदे ओह, माई कदे न वेखी खांदी, (2)
फिर ऐवें कहंदा की, जा के चाढ़ी कुकड़ियां लेले, की मंगणा....

4. अक्खां नाल काली माई नूं, कदे न बोतल पींदी वेखया,
वड्ड खांदे मुर्गे नूं, देखो जुल्म कमांदे ऐह की, (2)
देणा पेंदा बदले नूं, जा के विच चौरासी जेले, की मंगणा....

5. कदे खांदा वेखया ना, वंड्डण मिरां साब दे बकरे,
न वादू बाबे दा, खांदे आप बणा के डकरे, (2)
लक बनया पापां ते, ऐसा पाप चुका दू धेले, की मंगणा....

6. बाबा जंडवाले नूं, पींदा तेल कदे ना वेखया,
जा मुड्डी डोलदियां, पीवे फेर जे होवे जिंदा, (2)
जा मत्थे टेकदियां, ज्योंदे रहण गुरु मेरे मेले, की मंगणा...

7. फिर लस्सी पींदा वेखया, ओत किसे न अखीं,
जा मत्थे टेकदियां, बाबा जी लाज असां दी रखीं, (2)
जद आप ओत मर गया, कित्थों दे दू पुत्तां दे रेले, की मंगणा...

8. चरणी सतगुरु जी दे, लग जाओ वहम छड्डके सारे,
गुरु चरणी लगयां नूं, ला दू सतगुरु पार किनारे, (2)
कहंदा सच ख्याल पुरे, कर लो सतगुरु जी नाल मेले, की मंगणा.....

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इस शब्द में जो भी वहम बताए गए है किसी को कोई न कोई वहम लगा हुआ है। बहुत से प्रेमी सालासर जाकर या किसी और मेले में जाकर बच्चे का मुंडन करवाते हैं फिर सतसंगी बनकर मेरे पास आकर कहते हैं, ''देखो बाबा जी! हम कहीं नहीं गए हम तो आपको मानते हैं।'' हम एक वहम छोड़कर दूसरा वहम अपना लेते हैं। क्या यह भक्ति है या गुरुमत है?

हम आम घरों में देखते हैं किसी घर में रखे हुए कपड़े कट जाते हैं। किसी घर में आग लग जाती है। घर के लोगों को चाहे जितना मर्जी समझा लें वे कहते हैं कि यह बात प्रत्यक्ष है हमारे देखते–देखते ही आग लग गई। हमें पता है किसी घर में कोई आर्थिक तकलीफ हो, सास–बहु का झगड़ा हो, देवर–भाभी का झगड़ा हो उसमें पता नहीं कौन किसको नीचा दिखा रहा है? ऐसे लोग किसी स्याने का सहारा लेते हैं। ऐसे स्याने अपनी शान दिखाने के लिए परिवार के किसी सदस्य का नाम लगा देते हैं जिससे घर में कलेश हो जाता है अगर उन्हें प्यार से समझाएं तो वे नहीं मानते घरों में लड़ाई–झगड़े होते हैं यह सारा ही पाखंड है, **अंधविश्वास** है।

यहाँ से चरनजीत अपने घर गई तो उसने देखा कि उसके कपड़े कटे हुए थे। वह घबराकर यहाँ आई उसने कपड़े दिखाकर कहा कि इसमें कई कपड़े ऐसे भी हैं जो उसने अभी पहने भी नहीं थे। मैंने उसे बहुत समझाने की कोशिश की लेकिन कपड़े कटने के कारण उस लड़की से सतसंग का सारा रंग उतर गया। मैं जब उसके परिवार से मिला तो मैंने कहा कि सन्त कभी करामात नहीं दिखाते लेकिन अब मजबूर होकर कुछ करना पड़ेगा अगर अब कोई इसके कपड़े काटेगा तो रात को उसका सिर मुंड जाएगा। मैंने चरनजीत से कहा! तू अपने घर जा अब तेरे कपड़े नहीं कटेंगे, इसके बाद उसके कपड़े नहीं काटे गए। आमतौर पर घरों में ऐसे वहम होते हैं।

हमारे यहाँ एक बाबा शराब पीता था अगर किसी ने उससे सवाल करना कि तू शराब पीता है तो वह कहता, ''मैं शराब नहीं पीता ये तो देवता

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

माँगते हैं।'' आप देखें! जीभ अपनी पेट अपना और बदनाम देवता। देवता तो शराब के नज़दीक नहीं जाता लेकिन हम **अंधविश्वास** को मानते हैं। मेरा जातिय तजुर्बा है कि ठग्गी लालची के साथ ही होती है।

मेरे पिछले गाँव में एक सोहना सिंह था, जैसा उसका नाम था वैसा ही उसका रूप भी था लेकिन वह **अंधविश्वास** पर बहुत विश्वास करता था। वह किसी चेले की बात में आ गया जिसने उससे कहा कि मैं रूपये दोगुने कर देता हूँ। सोहना सिंह उसके आगे हाथ जोड़कर बैठ गया। हमारे गाँव के किसी सिक्ख ने कहा कि तू जिसके आगे हाथ जोड़कर बैठा है वह हुक्का पी रहा है अगर हाथ जोड़कर बैठना ही है तो किसी अच्छे आदमी के आगे बैठ। उस चेले ने सोहना सिंह के चार हजार रूपये खा लिए और कहा कि मुझसे ज्यादा तगड़े गंगानगर में कचहरी रोड पर हैं।

गंगानगर में कचहरी रोड पर आमतौर पर तोते वाले बैठे होते हैं जिन्होंने तोते सिखाए होते हैं, तोते पर्ची निकाल देते हैं, पर्ची पर लिखा होता है तू सुखी रहेगा, तू दुखी रहेगा, तेरी मुरादें पूरी होंगी। पर्ची पढ़कर हम खुश हो जाते हैं। उस समय गंगानगर रेलवे स्टेशन पर एक वजन तोलने वाली मशीन थी। उस मशीन में दो आने डालने से एक टिकट निकल आती थी; उन टिकटों पर भी ऐसा ही लिखा होता था।

कचहरी रोड पर बैठे लोगों ने कहा कि हम देवी प्रकट कर लेते हैं। देवी को प्रकट करने के लिए कोई आदमी सामग्री नहीं देता। सोहना सिंह ने कहा कि मैं सामग्री दूँगा। उन्होंने कहा कि सामग्री देने से तुझे सोने की चार ईंटे और बावन लाख रूपये मिल जाएंगे। हम लोग दस–पन्द्रह हजार खर्च करना आसान समझते हैं। उसने सारी जिंदगी में डेढ़ मुरब्बा जमीन बनाई थी, उस जमीन को उसने आसानी से बेच दिया।

उन दिनों मेरी सेहत अच्छी थी मैं खुद गंगानगर गेहूँ लेकर जाता था। मेरे आढ़ती के पास सोहना सिंह की भी आढ़त थी। आप बहरूपिये बनते

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हुए भी देखते हैं। उन्होंने सोहना सिंह को चार बाहें लगाकर तेज रोशनी में देवता दिखा दिया। देवता ने कहा, ''मैं भूखा हूँ कलयुग में कोई मेरी पूरी पूजा नहीं करता जो मुझे खुश करके प्रकट करेगा उसे चार सोने की ईंटे और बावन लाख रूपये मिल जाएंगे।'' सोहना सिंह ने चुप करके रूपये तोते वालो को दे दिए और बाकी आठ सौ रूपये रह गए।

महाजन स्याने होते हैं उसने सोहना सिंह को समझाया कि तू मुझे बता दे तूने रूपये किसको देने हैं? अगर वह बताए तो पोल खुले! तोते वालो ने उसे एक छोटा सा मंत्र बता दिया कि तू अंदर बैठकर चालीस दिन तक इस मंत्र का जाप कर, इस बारे में किसी से कोई बात मत करना; घरवाली से कहना कि सुबह उठकर रोज घर के आगे झाड़ू लगाया करे। उसने घर आकर बताया कि चालिसवें दिन लक्ष्मी आएगी तू दरवाजा साफ रखा कर। बेचारी घरवाली रोज सफाई करे, शब्द बोले।

तोते वाले पैसे ले गए थे जिन लोगों ने यह देखा था उन्हें यह पता नहीं था कि यह जट्ट कहाँ का है? जिसने बहरूपिये का रूप धारण किया था वह कहाँ का है? जिन्हें पैसे नहीं मिले वे हमारे गाँव में आए। वे हमारे गाँव में भिक्षा तो नहीं माँगे लेकिन जिस घर में जाएं वहाँ इस तरह बोले जैसे पंडित बोलते हैं। हमारे गांव में बहुत चर्चा हुई कि ये लोग भिक्षा तो नहीं लेते लेकिन दिलों की बात बताते हैं; वे सोहना सिंह के घर भी चले गए। घर के आगे सोहना सिंह की घरवाली झाड़ू लगा रही थी। उन पंडितों ने कहा, ''भक्ता मत्थे की फुट गईयां।''

सोचकर देखें! आपने बावन लाख की आशा लगाई हो और कोई आपके घर आकर यह कहे कि मत्थे दियां फुट गईयां तो दुख आएगा ना। वह औरत झाड़ू लेकर पंडित के पीछे पड़ गई।

उस समय मैं आर्युवेदिक करता था। सोहना सिंह को टट्टियां लगी हुई थी उसने मुझसे कहा कि नब्ज देखकर दवाई दे। मैंने नब्ज देखकर कहा,

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

''तेरा दिल हिला हुआ है।'' उसने कहा, ''मेरा दिल कैसे हिल गया?'' मैंने कहा यह तो मुझे नहीं पता। उसने मुझसे पाँच हजार रूपये माँगे कि मैंने पैंसठ हजार की जमीन खरीदी है मुझे पैसे दे दे। मैंने हँसकर कहा, ''मेरे पास तो पैंसठ पैसे भी नहीं मैं तुझे कहाँ से दूं।'' वह मुझसे कहने लगा कि मेरी सोने के मडगार्ड वाली कारे चलेंगी मैं तुझे उनमें नहीं बिठाऊंगा। मैंने कहा, ''मैं अपनी साईकिल पर ही चला जाया करूंगा तू मुझे मत बिठाना।''

सोहना सिंह उठकर बाहर उन पंडितों के पास गया। पंडितों को पता था कि यह जरूर हमारे पास आएगा। पंडितों ने उससे कहा, ''भक्ता! तेरे साथ ठग्गी हुई है, न कोई देवता है न देवी; न तुझे बावन लाख मिलें न सोने की ईंटे मिलें। तेरे पैसे गए तुझसे कुछ होता है तो कर ले।'' सोहना सिंह आढ़ती के पास आया आढ़ती ने पुलिसवालों से बात की। पुलिसवालों ने कहा कि हम कोशिश करेंगे। आढ़ती ने मुझसे पूछा इसके आठ सौ रूपये है वह इसे दे दें। मैंने कहा कि ये तुम्हारी मौज है। यह बीस साल पुरानी बात है वे तोते वाले अभी तक नहीं पकड़े गए। मेरा आपको कहानियाँ सुनाने का भाव कि यह सारा **अंधविश्वास** है। आपको 'नाम' मिला है आप सतसंगी हैं इस तरफ से बचें कोई देवी–देवता आपसे खुद नहीं माँगता।

मैं अपने घर की बात भी बताता हूँ कि मेरी एक बुजुर्ग बहन थी अब वह संसार छोड़ गई है। वे बानी पढ़ने वाले अकाली थे। उन्होंने अपने घर में कभी मीट–शराब नहीं आने दिया था। अचानक उनके घर में कई मौतें हो गई अगर घर में अचानक तीन–चार मौतें हो जाए तो बंदे के दिल पर बुरा असर हो जाता है। हमारे जीजा पर कुछ ऐसा असर हुआ जिससे उसे मिर्गी की बीमारी हो गई, जब उसे मिर्गी का दौरा पड़े तो परिवार के सब लोग भागकर बाहर चले जाते थे।

हमारी सत्तर साल की बुजुर्ग बहन ने हमारे जीजा को भूत बना दिया। वह कहती कि मुझे तीन खड़े हुए दिखाई देते हैं। हमारा जीजा बहुत स्याना

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

था उसने मुझे संदेश भेजा कि तू आ। मैं वहाँ गया। भूत को सच बनाने के लिए मेरी बहन ने एक जानवर का रस्सा खोल दिया। एक जानवर का रस्सा खुल जाए तो वह दूसरे जानवरों से टकराकर उनका रस्सा भी तोड़ देता है। एक तरफ जानवरों का भूचाल पड़ा दूसरी तरफ जीजा को दौरा पड़ा उसने चीख मारी।

मेरी बहन भागकर आई और मुझसे कहा कि तू इसकी दाढ़ी पकड़कर इसे दो–चार थप्पड़ मार। मैं घबराया कि यह क्या हो रहा है? जीजा बीमार है और मेरी बहन कहती है कि इसे थप्पड़ मार। थोड़े समय बाद जब उसे होश आया तो वह वाहेगुरु–वाहेगुरु कहने लगा। जीजा ने मुझसे कहा, ''अजायब सिंह! मुझे यह रोग है क्या तुझे कुछ समझ आया।'' मैंने उससे हँसकर कहा कि इतना समझ आया है कि आज तू हम बहन–भाई के काबू आ गया था। मैंने अपनी बहन को बताया कि इसे मिर्गी का रोग है। मेरी बहन ने कहा मुझे तीन दिखाई देते हैं वे अभी मेरे सिरहाने खड़े थे मुझे दबाने लगे तो मैं उठकर खड़ी हो गई। उन्होंने ही जानवरों का रस्सा तोड़ा था। मैंने बहन को मनाने के लिए जोर लगा लिया लेकिन वह नहीं मानी।

मेरा एक नौकर जैला था, उस पर कर्जा हो गया वह औलिया बनकर लोगों का भूतकाल भविष्यकाल बताने लगा। हमारी बहन **अंधविश्वास** में आकर उसे अपने घर ले आई। हमारे मासड़ जी, जीजा जी ने कभी सिगरेट वालों को अपने घर में घुसने नहीं दिया था। जैला ने कहा कि हम तीन दिन आपके घर में मंत्र पढेंगे आप सिगरेट के लिए मना मत करें और शराब लाकर घर में रख दें। पहले जंडवाले बकरा छोड़ते थे अब महँगाई आ गई है घोड़ी छोड़ो, उन्होंने घोड़ी लाकर बांध दी। मुझे वहाँ जाना पड़ गया। यह सब देखकर मुझे बहुत गुस्सा आया कि जिससे हमने पैसे लेने हैं वह उसी घर में जाल बिछाकर बैठा है। मैंने जैला का गिरेबान पकड़कर कहा कि मेरे पैसे दे। मेरी बहन मेरे आगे हाथ जोड़ने लगी, ''भाई! तुझे इसकी ताकत

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

का पता नहीं।'' जैला ने हाथ जोड़कर मुझसे कहा कि मैं तेरे पैसे जरूर दूंगा तू मेरी जान छोड़ दे। मैं दोबारा इस घर में नहीं आऊँगा।

महाराज सावन सिंह जी अपने ननिहाल की बात सुनाया करते थे। यह बात मैं कई बार संगत में सुनाया करता हूँ। वहाँ किसी जट्ट के खेत में माता रानी की मढ़ी थी। लोग उस मढ़ी को पूजने जाते तो जट्ट की खेती खराब होती थी अगर जट्ट किसी से कुछ कहता तो वहाँ के लोग उससे कहते कि तू लोगों को पूजने से हटाता है माता रानी तेरी जड़े उखाड़ देगी। जट्ट ने एक मिस्त्री से बात की कि मैं एक गरीब आदमी हूँ तू मेरी मदद कर। मिस्त्री और जट्ट ने आपस में सलाह की।

उस समय गाड़ी में दो बैल जोड़े जाते थे। जट्ट और मिस्त्री एक रात मढ़ी को गाड़ी पर रखकर शहीदां वाली ले जाकर अच्छी तरह मिट्टी डालकर रख आए। सुबह जट्ट ने कंबल ओढ़कर मुँह ढ़ककर कहा कि रात को बहुत आतिशबाजी चली, ढोल बजे, छिड़काव हुआ। जो भी आए वह यह पूछे कि रात को ऐसा क्या हुआ? उस समय मिस्त्री भी वहाँ आ गया क्योंकि उन्होंने पहले ही सलाह की हुई थी। मिस्त्री ने कहा, ''कल की रात भी कोई सोने वाली थी। रात को बहुत आतिशबाजी चली सारे गाँव में रोशनी हो गई। रात को अपनी माता रानी को शहीद ब्याहने आ गए वह बहुत रोई कुरलाई लेकिन शहीद उसको ब्याह कर ले गए।''

लोग बहुत परेशान हुए। जब वहाँ गए तो वहाँ गाड़ी खड़ी थी क्योंकि उस समय लड़की दो बैलों की गाड़ी में ही लेकर आते थे। जट्ट ने युक्ति से अपनी जमीन को बचा लिया। लोगों ने माता रानी को शहीदों वाली में पूजना शुरू कर दिया। कबीर साहब का यह शब्द इसी बारे में है, गौर से सुनें:

दुनिया झामर झूमर अरूझी, दुनिया झामर झूमर अरूझी।।
अपने सुत कै मुँडन करावै, छूरा लगन न पावै।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कबीर साहब कहते हैं, ''फायदा हो या न हो दुनियां ऐसे ही **अंधविश्वास** में इधर–उधर दौड़ रही है। जब हम अपने लड़के का मुंडन करवाते हैं उस समय बच्चा छोटा होता है तो नाई से कहते हैं कि देखना कहीं इसे उस्तरा न लग जाए। रिवाज़ है चाहे हिन्दु मुंडन करवाएं चाहे मुसलमान सुन्नत करवाये उस दिन हलवा मांडा, मीट शराब उड़ता है। कोई भाग्यशाली घर ही बचता है नहीं तो ज्यादातर इसी श्रेणी में हैं। नाई से कहते हैं कि बच्चे को छोटा सा भी टक न लग जाए लेकिन बकरी के गले में छुरी मारते हैं।''

पीड़ सबन को एक है मुर्गी हिरनी गाय।
आंख देख नर खात है तो बाधे जमपुर जाय।

सबको एक जैसी तकलीफ होती है चाहे मुर्गी, हिरनी, गाय या इंसान है। किसी भी सन्त ने माँस खाने की इज़ाज़त नहीं दी। तुलसी साहब ने घट रामायण में गुरु नानकदेव जी महाराज की बहुत तारीफ की है कि गुरु नानक जी बड़े दयाल थे। उन्होंने अपने पवित्र ग्रन्थ में मीट शराब को जगह नहीं दी बल्कि यह कहा:

जे रत लगे कपड़े जामा होऐ पलीत, जो रत पीवे मानसा तिनको निर्मल चीत।

आपने शराब को रत कहकर बयान किया है। आप किसी का गला काटकर चाहे तिल जितना ही खाएं फिर चाहे करोड़ो गाय दान कर दें लेकिन जब तक चांद सूरज हैं वे इस बात की गवाही देंगे। इंसान नर्क से नहीं निकल सकता। परमात्मा ने हर किसी को जीवन दिया है जितना एक इंसान का हक है उतना ही पशु–पक्षी का भी है। कबीर साहब कहते हैं:

माँस माँस सब एक है मुर्गी हिरनी गाय।
आँख देख नर खात है बाधे यमपुर जाय।

कई कौमें किसी जानवर का माँस खाती हैं कई ऐसी है जो किसी दूसरे का माँस खाती हैं। चाहे आपने मुर्गी, हिरनी या इंसान का माँस खा लिया। सबका माँस एक ही तरीके से माता–पिता के संजोग से बनता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आप जिसका गला काटेंगे वह आपका गला भी काटेगा। बदला हर किसी को देना पड़ता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

लिए दिए बिन रहे न कोय।

अजया कै चिंगना धरि मारै, तनिकौ दया न आवै।।

बकरी के बच्चे को तलवार मारता है, उस पर रहम नहीं करता।

लैके तेगा चला बाँकुरा, अजया कै सिर काटा।
पूजा रही सो मालिन लै गइ, कूकुर मूरत चाटा।।

हम जिस मूरत के आगे बलि देते हैं वह निर्जीव है। जीवित को काटकर निर्जीव के आगे चढ़ाते हैं। उस बेचारी मूरत को खाने के लिए क्या मिलता है? वहाँ जो बैठे होते हैं वे मसाले लगाकर खा लेते हैं और कुत्ते उस जगह को चाटते रहते हैं।

हरबंस यहाँ बैठा है उसे पता है कि मेरे पिछले गांव में मेरे खेत के पास एक जंडी थी। हमारे मालवा के लोगों को सुबह जंड के आगे तेल डालने की आदत है। मालवा की औरतें सुबह लम्बे–लम्बे घूंघट निकालकर आती किसी ने वहाँ पैसे चढ़ाने किसी ने हलवा रखना किसी ने लस्सी तो किसी ने दूध रखना।

उस रात मेरे पास दो सतसंगी रूके हुए थे। एक बीकानेर का डी एस पी और दूसरा रिवाड़ी का थानेदार था। वहाँ एक हरिजन था उसने देखा कि ये लोग बाबा को पूजते हैं मैं भी इसकी पूजा करूं, उसने भी घर से थोड़ा सा तेल लिया उस जंड पर तेल और सिंदूर लगाया और उसी जगह पेशाब करने बैठ गया। जब वहाँ पैसे रखे हुए देखे तो मेरे नौकर जैला ने वहाँ से पैसे उठा लिए। वे दोनों सतसंगी मेरे चौबारे से यह सब कुछ ही देखकर हँस रहे थे। जब मैं ऊपर गया तो उन्होंने पूछा कि यह क्या माजरा है? मैंने हँसकर कहा कि यह **अंधविश्वास** है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

वहाँ पास में ही एक मढ़ी थी। मैं रोज वहाँ बैठकर भजन–अभ्यास किया करता था क्योंकि उस मढ़ी के पास छोटे–छोटे पेड़ थे इसलिए हवा नहीं लगती थी। एक दिन वहाँ पूजा करने वालों का समय था। घर से औरतें आई तो उन्होंने आदमी को बैठे देखा। वे अपना लोटा–पानी वहीं फैंककर भाग आई कि यहाँ तो बाबा बैठा है। घरवालों को पता था कि मैं यहाँ बैठता हूँ। मैं अभ्यास में बैठा हुआ था, वे लोग आकर खड़े हो गए। उन्होंने सोचा कि औरतों को बुखार चढ़ जाएगा इनका शक निकालना भी जरूरी है। जब मैं अभ्यास से उठा, मुँह से कपड़ा उठाया तो उन्होंने कहा कि देखो हमनें तुम्हें कहा था कि यह बाबा है। मैंने हसँकर कहा, ''तुम रोज पूजा करती हो अगर वही बाबा प्रकट होकर दर्शन दे दे तो तुम उससे बातें करो लेकिन हम लोग **अंधविश्वास** को ज्यादा मानते हैं।''

कबीर साहब कहते हैं कि मूर्ति को कुत्ते चाट जाते हैं। लोग देवता के नाम पर खाते हैं। कोई पीर किसी से मुर्गा या बकरा नहीं माँगता खाने वाले और लोग ही होते हैं।

माटी के चौतरा बनाइन, कुत्ता मुत मुत जाई।
जो देउता में सक्ती होती, कुत्ता धरि धरि खाई।।

आप प्यार से कहते हैं कि मिट्टी का चबूतरा बना लिया। उस चबूतरे पर रोज़ाना कुत्ते पेशाब कर जाते हैं अगर देवता में शक्ति होती तो क्या वह कुत्ते को पेशाब करने देगा? हम लोग फिर भी इस बात को नहीं मानते।

हम जमींदारों को पता है कि गीदड़ ऊँची जगह पर जाकर ही बिष्टा करते हैं। मैं अपने परिवार की बात बताया करता हूँ कि हमारे खेत में एक मढ़ी थी वहाँ गीदड़ ने बिष्टा किया हुआ था। मैं अपने पिता जी के साथ ही था मेरे पिता जी ने मढ़ी से कहा अगर गीदड़ को मारकर यहाँ फैंकेगा तभी मैं तेरी पूजा करूंगा। मढ़ी ने गीदड़ को नहीं मारा, पिता जी मढ़ी को मानने से हट गए; हमारी ऐसी ही पूजा है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गोबर लैके गौर बनाइन, पूजैं लोग लुगाई।
यह बोलै वह बोल न जानै, पानी में डुबकाई।।
सोने की इक मुरति बनाइन, पूजन को सब धाई।
बिपति पड़े गहने धरि खाई, भल कीन्हो सेवकाई।।

कबीर साहब कहते हैं कि सन्त किसी के देवी–देवता की निन्दा नहीं करते। आपने देवी–देवता की मूर्ति बनाने में जो मेहनत की है समय लगाया है वह बेकार चला जाएगा। पिछले समय में पैसों का और मूर्तिकला का ज्यादा विस्तार नहीं था, लोगों ने काठ की मूर्तियां बनाई फिर पत्थर की मूर्तियां बन गई। अब धीरे–धीरे लोग पीतल, चाँदी और सोने की भी मूर्तियां बनाने लगे हैं। सोने की मूर्ति बनाकर लोग उसे पूजते हैं अगर घर में पैसे की कमी आई तो पुजारी साहब ने वह मूर्ति बेचकर खा ली। क्या यह सेवक का काम है कि वह अपने देवता या गुरु पीर को बेचकर खा जाए! क्या यह धोखा नहीं; **अंधविश्वास** नहीं?

बाबा बिशनदास जी अपने गांव की एक आप बीती सुनाया करते थे कि उनके यहाँ एक पुजारी था। उस पुजारी को खाने–पीने की, नशा करने की आदत थी। मंदिर में कुछ अच्छी मूर्तियां थी उनमें से वह एक मूर्ति बेच लिया करता था। जब सुबह पूजने वाली औरतें आकर पूछती, ''पुजारी जी! वह देवता कहाँ है?'' पुजारी कहता, ''वह देवता देवलोक को चला गया है।'' महीने बाद उसने दूसरी मूर्ति भी बेच दी फिर औरतों ने पूछा तो उसने कहा कि वह देवता भी देवलोक को चला गया है क्योंकि अब लोगों की श्रद्धा कम हो गई है। जब उसने सारी मूर्तियों को बेच दिया तो औरतों ने पूछा कि पुजारी जी सारी मूर्तियां कहाँ गई? पुजारी ने कहा कि अब लोग श्रद्धाहीन हो गए हैं। आखिर उसने यह कहा:

धीरे धीरे चले जाएंगे देवताओ के साथ।
या रह जाऊ देवी काठ की या रह जाऊ पारथ नाथ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

धीरे–धीरे ये सब देवता एक–दूसरे के पीछे चले जाएंगे, जो रह गए हैं ये भी चले जाएंगे। काठ और पत्थर के देवी–देवता रह जाएंगे क्योंकि इसका किसी ने कुछ नहीं देना।

देबी जी कौ खस्सी भेड़ा, पीरन कौ नौ नेजा।
उन साहिब को कुछ भी नाहीं, बाँह पकरि जिन भेजा।।

कबीर साहब कहते हैं, ''आमतौर पर गाँवों में भी यह रिवाज है कि बकरा पालते हैं उसे नपुंसक करवा देते हैं ताकि उसके अंदर अच्छी चर्बी बन जाए। कई साल तक उसे बच्चों की तरह पालते हैं फिर उसे काटकर किसी देवी–देवता पर भेंट चढ़ाते हैं, कुछ पीर के आगे रखते हैं। देवता आपसे बकरे क्यों माँगेगा? कभी यह भी फिक्र किया है कि जिस मालिक ने हमें यह जीवन दिया है, बाँह पकड़कर संसार में भेजा है उसके सामने जाकर फिर पेश होना है!''

पाती तोड़े मालिन पाती पाती जीओ।
जिस पाहन को पाती तोड़े सो पाहन निर्जीव।
ब्रह्म पाती बिशन डारी फूल शंकर देव।
तीन देव प्रतख तोड़े करे किसकी सेव।

हे मालिन! पत्ते–पत्ते में परमात्मा है तू उसे तोड़ती है। पत्ते में ब्रह्मा है। डाली में विष्णु है। फूल में शंकर है। तू ये तीनों देवता प्रत्यक्ष तोड़ती है इन्हें तोड़कर किसकी सेवा कर रही है? पत्थर तो बोलता नहीं। फिर कहते हैं:

जो पत्थर को कहते देव, ताकी बिरथा जावे सेव।
जो पत्थर की पाईं पाए, तांकी घाल अजाई जाए।
ठाकुर हमरा सदबोलंता, सर्व जियां को प्रभ दान देता।

परमात्मा ने हमें जीव का दान दिया हुआ है। वह बोलता है हमारी हर हरकत को देखता और सुनता है।

मालन भूली जग भुलाना हम भुलाने नाहीं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मालिन भूल गई। जगत भी भूल गया लेकिन हम नहीं भूले क्योंकि हम पर परमात्मा गुरु की कृपा है।

निरगुन आगे सरगुन नाचै, बाजै सोहँग तूरा।

हम जीवित को काटते हैं; पत्थर में जीवन नहीं हम उनके आगे उसकी भेंट रखते हैं।

चेला के पाँव गुरु जी लागैं, यही अचम्भा पूरा।

कबीर साहब कहते हैं कि यह कलयुग का प्रभाव है कि गुरु चेले के पैर पकड़ता है। यह आँखों देखी बाते हैं। हमारे यहाँ एक नानूनाथ होता था पहले वह कीर्तन वगैरहा किया करता था; वह कुछ समय साधुओं के साथ भी रहा है। वह मेरी बहुत मुखालिफत करता था। मैं जब प्रेमियों को अभ्यास में बिठाता तो वह बाहर जाकर कहता कि सन्तों को जेब काटने की बहुत महारत है, सबकी आँखें बंद करवाकर बिठा देते हैं और जेबें काट लेते हैं।

बाहर बैठे सतसंगी, खासकर बीबीयों को बहुत गुस्सा आता कि यह सन्त जी की इतनी निन्दा करता है फिर भी सन्त जी इसे अपने पास क्यों बिठाते हैं! जब वक्त आया उसने महाराज जी से 'नाम' लिया फिर नाम की खुशी में मेरे पास मेंढ़क की तरह उछल–कूद करने लगा कि मैंने आपकी निन्दा की है। पता लगता है जब हम 'नाम' ले लेते हैं।

आमतौर पर हम लोग जिन्हें गुरु धारण करते हैं ऐसे गुरु हमारे घर भी आ जाते हैं। अपने चेले के पाँव भी पकड़ते हैं कि यह हमें अच्छा खाने के लिए देगा, अच्छा चढ़ावा चढ़ाएगा। ऐसे गुरु खुद कमाई नहीं करते उन्हें न अपना खौफ होता है न परमात्मा का ही खौफ होता है।

एक प्रेमी महाराज जी के पास जाता था उसकी औरत कहती कि मैं फलाने साधु को गुरु धारण करूंगी। पड़ोसियों ने कहा कि पहले हम गुरु

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

धारण करेंगे, उन्होंने उस गुरु के लिए प्रशाद बनाया, खीर बनाई लेकिन गुरु को पसंद नहीं आई फिर गुरु नाराज़ हुआ कि पैसे कम दिए हैं। वह एक रूपया देती थी लेकिन गुरु दस रूपये माँगता था। आखिर नानूनाथ ने बीच–बचाव करके पाँच रूपये में मामला सुलझाया। ऐसे गुरु चेलों के पाँव क्यों नहीं पकड़ेंगे?

जब दूसरे घर के लोग उसे गुरु धारण करने लगे तो उन्होंने खीर और प्रशाद नहीं बनाया तो उस गुरु ने नानूनाथ से कहा, ''इनकी भैंस मर जाए, इन्हें भगवान दाने न दे इन्होंने मेरे लिए प्रशाद, खीर नहीं बनाई।''

मैं आमतौर पर उस गाँव में पन्द्रह दिन के बाद जाया करता था। मैंने एक दिन उनके घर सतसंग दिया। प्रेमियों को मेरी खुराक के बारे में पता है कि मैं बिल्कुल सादा खाना खाता हूँ। मैंने न उनसे कुछ माँगा न ही खाने में कोई नुख्स निकाला। बीसीयों प्रेमियों ने उनके घर में भजन किया। उस औरत ने अगले दिन हाथ जोड़कर कहा कि अब मैं आपसे 'नाम' लूंगी।

जाति बरन दूनों हम देखा, झूठी तन की आसा।
तीनों लोक नरक में बूड़े, बाह्मन के बिस्वासा।।

कबीर साहब कहते हैं ऐसा नहीं कि हमने पंडित, भाई या पादरी ही देखे हैं, हमने सारे कुल, वर्ण और समाज देखे हैं। यह **अंधविश्वास** सबके अंदर ही फैला हुआ है।

दक्खण देश हरि का वासा पश्चिम अलो मुकामा।
दिल में खोज दिलोंदिल खोजो यही ठौर मुकाना।

हिन्दु लोग कहते हैं कि परमात्मा का वास दक्षिण में हैं, काशी से जगन्नाथ पुरी बिल्कुल दक्षिण में है। मुसलमान कहते है परमात्मा का वास पश्चिम में हैं वे पश्चिम की तरफ मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं। हिन्दुओं ने बारह एकादशियाँ शुरू कर दी और मुसलमानों ने रमजान का एक महीना

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

रख लिया अगर परमात्मा दक्षिण या पश्चिम में है तो बाकी जगह परमात्मा ने क्यों सूनी छोड़ दी, बाकी लोगों का कौन है?

ग्यारह मास पासते राखे एके में रमजाना।

क्या हमने ग्यारह महीने परमात्मा की भक्ति से दूर हो जाना है, हम ग्यारह महीने पाप करते रहें क्या परमात्मा एक महीने में ही मिल जाएगा? मक्का में गुरु नानकदेव जी से यही सवाल किया गया कि भक्ति के लिए कौन सा समय ठीक है? तब गुरु नानकदेव जी ने कहा:

ईक खिन्न जो बिसरे स्वामी जानो बरस पचासा।

अगर हम सैकिंड जितना समय भी परमात्मा को भूल जाएं तो पचास साल का अंतर पड़ जाता है। जब यही सवाल कबीर साहब से किया गया कि परमात्मा की भक्ति का कोई समय है? तो आपने कहा:

जब लग तागा बाहो बेही तब लग बिसरे राम सनेही।

नली में धागा डालने में भी थोड़ा सा समय लगता है। पहले धागा थूक लगाकर डालते थे आजकल तो लोग मोम वगैरहा लगा लेते हैं। अगर मैं इतना समय भी परमात्मा को भूल जाऊं तो मेरा घाटा पूरा नहीं होता। इसलिए सन्त कहते हैं, ''जब साँस ऊपर जाता है तब भी सिमरन करें और जब साँस नीचे आता है तब भी सिमरन करें।''

रही एक की भइ अनेक की, बेस्या सहस भतारी।
कहै कबीर केहि के संग जरिहौ, बहुत पुरुष की नारी।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर सारी जिंदगी में एक सन्त से प्यार हो जाए तो समझ लें कि हमने बाजी जीत ली है। मन एक है किस–किस तरफ लगाएंगे?''

लोगों ने एक–एक घर में पच्चीस–पच्चीस देवता बना रखे हैं। मेरे पास एक भक्त रहता था मैं उनके घर गया, उन्होंने अपने घर में देवताओं

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

की दस–बारह मढ़ियां बनाई हुई थी। मैं एक घंटा वहाँ बैठा तो मेरे दिल में उनके लिए प्यार आया कि मैं इनका फायदा करुं। मैंने भक्त से कहा कि मेरे बैठे हुए ही तू इन मढ़ियों को बाहर फैंक आ। वह मढ़ियों को बड्डल में डालकर बाहर फैंक आया फिर उसने कहा कि एक मढ़ी ऊपर कोठे पर भी है। मैंने कहा वह भी ले आ। उनका बूढ़ा कहने लगा पहले तो हम नहीं बोले लेकिन उस मढ़ी को न हिलाएं वह हमारा शक्तिशाली देवता है।

मैंने कहा अगर वह शक्तिशाली देवता है तो भक्त को उठाकर नीचे फैंकेगा। मेरे पास गाड़ी है, हम इसे गंगानगर अस्पताल ले जाएंगे। भक्त ने उस मढ़ी को भी उठाकर बाहर फैंक दिया। जब मैं वहाँ से चलने लगा तो परिवार के सब लोगों ने कहा बाबा जी! आपके जाने के बाद अगर ये हमारे पीछे पड़ गए? मैंने कहा मैं आपसे न तेल माँगूगा न गाड़ी न किराया मांगूगा अगर ये देवता आपको तंग करे तो मुझे याद करना मैं आ जाऊंगा।

आप सेवादार हरबंस को जानते हैं कि इसका पिता नामलेवा अच्छा आदमी था। वह गुजर गया तो इन्होंने उसकी मढ़ी बना दी। ये खेत से आते और जाते हुए उस मढ़ी को मत्था टेकते। ये दोनों भाई मेरे पास आए तो मैंने इन्हें प्यार से कहा कि तुम्हारा पिता अच्छा नामलेवा था आप लोगों ने उसकी अच्छी सेवा की, वह आपकी सेवा से खुश था। अब आप लोगों ने जो मढ़ी बनाई है वह इसमें नहीं है। आगे तुम्हारे बच्चे भी इस मढ़ी को पूजेंगे।

दोनों भाईयों ने कहा कि हम तो इस बात के खिलाफ हैं लेकिन हमारे आस–पड़ोस वाले नाराज़ होंगे। मैंने कहा कि आप लोग यह कहना कि वह मुझे रात को मिला और उसने कहा कि तुमने मुझे यहाँ क्यों रखा हुआ है? वे सुबह उठकर मढ़ी की ईंटे दूर रख आए। अब दूसरे लोग उस मढ़ी को मानते हैं। हम लोगों की भी यही हालत है हमें यह भी पता नहीं होता कि वह आत्मा किस योनि में गई है? कबीर साहब कहते हैं:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जीवित पितृ न माने कोई मुए श्राद्ध कराही।
पितृ भी बपुरे को को पावे कौआ कूकर खाही।

जीते हुओं को हम पानी नहीं देते मरने के बाद उनके नाम पर घर–बार लुटाते हैं। आप उन जीते हुओं की सेवा करें।

जब सच्चे पातशाह चोला छोड़ गए उस समय मैं कुछ समय गाँव किल्लेयांवाली में रहा। मैंने वहाँ बहुत ही **अंधविश्वास** देखे। एक आदमी ने मुझसे कहा कि पानी कर दें मेरी भैंस दूध नहीं देती। मैंने कहा अभी कर देते हैं। वहाँ दरवाजे की एक चाबी रखी थी। मैंने उस पानी के ऊपर दो बार चाबी को फेरकर कहा कि इस पानी को पानी में मिलाकर भैंस को पिलाना और यह पानी चारे में मिलाकर भैंस को चारा खिलाना। उसने घर जाकर ऐसा ही किया। भैंस भूखी थी उसने पानी पिया चारा खाया तो दूध दिया। वह बाबे के लिए दूध का लोटा भरकर ले आया और कहने लगा कि मैंने आपकी करामात देख ली है। यह सुनकर मैं बहुत हँसा।

हमारे यहाँ एक फौजी सेवादार है जिसकी हमेशा यह शिकायत रहती कि हम जब जानवर खरीदकर लाते हैं तब थोड़े ही दिन दूध देता है बाद में वह जानवर जीवित नहीं रहता, दूध नहीं देता। एक दिन हम गंगानगर किसी को दिल्ली के लिए ट्रेन में बिठाने गए उस समय भागसिंह विरक मेरे साथ था मैंने उससे कहा चलो आज तुम्हारे ससुराल मोहनपुरा चलते हैं। हम उनके घर गए उनका मुँह मेरी तरफ था और मेरा मुँह उनके जानवरों की तरफ था, सारे जानवर सूखे हुए थे। उन्होंने मुझे अपना दुख बताया तो मैंने उनसे कहा कि तुम वहाँ मेरे पास आ जाना मैं तुम्हें बताऊंगा कि भैंस कब खरीदनी है?

उन्होंने तार को भेजा कि बाबा जी से पूछकर आओ कि भैंस कब खरीदें। मैंने उससे कहा कि घर के सब लोग आ जाएं तो मैं बताऊँगा कि भैंस कब खरीदनी चाहिए। आप जानते हैं कि जट्ट को मतलब बहुत प्यारा

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

होता है। वे सब मेरे पास आ गए, मैंने कहा, ''अगर गाय–भैंस को अच्छा चारा खिलाना हैं फिर तो ले आओ अगर दूध न दे तो मुझे उलाहना देना अगर आप लोगों ने चारा नहीं डालना तो किसी जीव का श्राप क्यों लेते हो! गाय–भैंस चार दिन इसलिए दूध देती है कि पिछले मालिकों ने चारा खिलाया होता हैं।'' हमारी यही हालत है **अंधविश्वास** के कारण बाबा के पास गए कि बाबा ने यह कह दिया, पाखंडियो ने ऐसे जाल बुने होते हैं।

फाजिल्का से दो महाजन अपनी पत्नियों के साथ मेरे पास आए। वे लोग सात–आठ देवताओं को मानते थे। दिन में किसी न किसी देवता ने गुस्से हो जाना। किसी बच्चे ने रोना तो उन्होंने वहम करना कि देवता की कसर होगी थोड़ा सा प्रशाद बना लेते हैं। उनका मिलाप अपने किसी सतसंगी से हुआ। वे यहाँ नाम लेने कि लिए आए तो मैंने उनसे कहा कि पहले आप दो–चार सतसंग सुनें। दो चार महीने बाद नाम ले लेना। उन्होंने कहा कि हम बहुत दुखी हैं, हम देवता फैंककर आपके पास आए हैं।

हमें **अंधविश्वास** से बचना चाहिए जिन्हें 'नाम' मिला है उन्हें भजन–सिमरन करना चाहिए। हम एक देवता नहीं अनेकों देवता बनाकर बैठ जाते हैं। किस–किसके साथ प्यार करेंगे?

कबीर साहब कहते हैं, ''एक औरत एक ही पति को खुश कर सकती है। वेश्या ने हजारों पति बनाए होते हैं वह किस किसको खुश करेगी? जितने दिन उसका रूप है उतने दिन सब उसके रूप के आशिक हैं उसकी सारी जरूरतें पूरी करते हैं लेकिन जब वह बीमार हो जाती है, बूढ़ी हो जाती है फिर वह संदेश भी भेजती है लेकिन कोई नहीं आता। वह तड़फ–तड़फकर जान दे देती है।''

जो औरत पतिव्रता है उसे अपने पति पर सब्र है अगर वह बीमार हो जाए बूढ़ी हो जाए तो उसका पति धन खर्च करके उसे ठीक करवाएगा क्योंकि वह एक की है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्यारेयो! मेरा दिल तो नहीं करता था कि मैं आपको कबीर साहब का यह शब्द सुनाऊं लेकिन मजबूर होकर मैंने आपको अपनी ज़िंदगी के हालात भी बताए और कुछ महाराज सावन सिंह जी का प्रतिकरण भी बताया। हमें जीवित पुरुष को मानना चाहिए। जीवित पुरुष बोलेगा आपकी बात का जवाब देगा अगर हम दुखी हैं तो वह कुछ न कुछ बताएगा।

कुछ लोग परमात्मा के शरीक बन जाते हैं, ऐसे लोगों ने हर जगह **अंधविश्वास** के फंदे लगाए हुए हैं। ऐसे चेले चाटड़े **अंधविश्वास** में डाल देते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''मारता भी वही है, रखता भी वही है, वह कुलमालिक है।''

प्यारेयो! आज संसार ने बहुत तरक्की कर ली है। खाद बदल गई हैं आज आप खेत में खाद डालें कल फसल का रंग देखें। पहले हम जो सफर समुंद्रो के द्वारा सालों में खत्म करते थे वे सफर आज महीनों के रह गए हैं। महीनों वाले सफर अब दिनों के रह गए हैं और दिनों वाला सफर अब हम घंटो में पूरा कर लेते हैं।

हमारे वैज्ञानिक ऐसे–ऐसे जहाज तैयार कर रहे हैं कि हम सुबह खाना खाकर न्यूयार्क जाएं और शाम को वहाँ पहुँच जाएं लेकिन हमारे दिल–दिमागों में वहम घुसे हुए हैं इसलिए हम वहीं खड़े हैं। हमें चाहिए कि हम अपने अंदर तब्दीली लाएं परमात्मा की भक्ति करें ताकि हमारा जीवन सफल हो। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सर्व रोग दा औखद नाम।

सारी बीमारियों की दवाई 'नाम' है। सबने विश्वास के साथ भजन करना है। आप जितना नाम जपेंगे परमात्मा उतना तो रहम करेगा ही। हमनें **अंधविश्वास** से बचना है, नाम जपकर अपने जीवन को सफल बनाना है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

27 फरवरी 1989

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मन की आग

वारां – भाई गुरदास जी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

परमात्मा ने हमारे ऊपर अपार दया की हमें अपनी भक्ति के लिए चुना और सन्त–सतगुरुओं की संगत में लाया। गुरुओं ने हम पर दया करके हमें शब्द–नाम के साथ जोड़ा; 'शब्द–नाम' हमारी रक्षा कर रहा है।

मैं अक्सर बताया करता हूँ कि अगर अंजाने में किसी के बेटे से कोई बुरा कर्म हो जाता है और उसे जेल में डाल दिया जाता है। बेशक पिता को अपने बेटे की हरकतें पसंद नहीं फिर भी वह मोह में बंधा हुआ अपने बेटे के लिए बड़े से बड़ा वकील करता है और उसे हर तरह से बचाने की कोशिश करता है।

उसी तरह हमारी आत्मा परमात्मा की अंश है जब यह आत्मा संसार में आई तो यह निर्दोष थी लेकिन मन का साथ लेकर इसने बुरे कर्म किए और कर्मों के जाल में फँस गई इसलिए इसे बार–बार इस संसार में आना पड़ता है। कर्मों की जंजीर का अंत नहीं लेकिन परमपिता परमात्मा का शुक्राना है कि वह दया करके गुरु के रूप में हमें मुक्त करवाने के लिए आता है क्योंकि हमारी आत्मा परमात्मा की अंश है इसलिए गुरु हमें कर्मों की जंजीर से छुड़वाने के लिए हर संभव कोशिश करता है।

गुरु दया करके हमें 'नाम' देता है और हमारे कर्मों की जंजीर को काटता है। गुरु आत्माओं को कर्मों के जाल से मुक्त करवाने के लिए ही आता है। सतगुरु सदा ही संसार में आए वे कभी कबीर, कभी सावन तो कभी कृपाल के रूप में आए। परमात्मा जीवों को मुक्त करवाने के लिए ऋषि–मुनि और महान सन्तों के रूप में आता है। सभी आत्माएं परमात्मा की हैं और सन्त सभी आत्माओं से प्यार करते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सन्त संसार में किसी खास जाति, धर्म के लिए नहीं आते उनकी नज़र आत्माओं पर होती है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

राधास्वामी धरा नर रूप जगत में गुरु होय जीव चेताये।
जिन जिन माना वचन समझ के, तिनको संग लगाये।

गुरु अर्जुनदेव जी अपने गुरु के लिए प्यार से कहते हैं, ''इस समय परमात्मा का नाम ही रामदास पड़ गया है। परमात्मा गुरु रामदास के रूप में आत्माओं को मुक्त करवाने के लिए आया है।''

परमात्मा सदा मुनष्य का चोला धारण करके इसलिए आता है क्योंकि हमजिन्स के साथ ही प्यार होता है, हम उसी की अंश हैं। हमने देवी–देवताओं को नहीं देखा, हम जानवरों और पशु–पक्षियों की बोली नहीं समझ सकते। जो सन्तों को नहीं समझते वे उनकी शिक्षा को किसी जाति या धर्म के दायरे में बंद कर देते हैं। सन्त इस संसार में बहुत बड़ा दिल लेकर आते हैं उनकी शिक्षा पूरी कायनात के लिए होती है।

एक बार कुछ मौलवी लोग कबीर साहब के साथ बहस करने के लिए आए और उन्होंने कहा, ''आप कहते हैं कि परमात्मा सबके अंदर है लेकिन यह सच नहीं; परमात्मा सिर्फ मस्जिद में ही रहता है।'' कबीर साहब ने उत्तर दिया, ''उन देशों के लोगों का क्या होगा जहाँ मस्जिदें नहीं हैं, उनका पालन–पोषण और देखभाल कौन कर रहा है?''

सन्तों का इस संसार में आने का उद्देश्य दीनता सिखाना, आत्माओं को 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ना और 'शब्द–नाम' की भक्ति करवाना है। पत्थर पूज–पूजकर हमारे दिल भी पत्थर हो चुके हैं।

कबीर साहब सारी कायनात के मालिक थे, आपमें बहुत दीनता थी। आप अपनी बानी में लिखते हैं, ''हे परमपिता! मेरे अवगुणों को माफ करें, आप दीन–दुखियों पर दया करते हैं; यह आपके हाथ में है कि आप मुझे मारें या मेरे ऊपर दया करें!''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एक बार भट्ट जाति के विद्वान लोगों ने गुरु अर्जुनदेव जी के पास आकर यह शब्द उचारा:

सब अवगुण मैं गुण नहीं कोई, क्यों कर कंत मिलावा होई।
ना मैं रूप ना बांके नैणा, ना कुल ढंग ना मीठे वैणा।
हम अवगुण भरे एक गुण नाहीं, अमृत छाड़ बिखे बिख खाही।
माया मोह भरम भए भूले, सुत दारा स्यों प्रीत लगाई।
एक उत्तम पंथ सुणयों गुरु संगत, तहं मिलत यम त्रास मिटाई।
एक अरदास भाट कीरत की, गुरु रामदास राख्यो शरणाई।

अगर परमात्मा की अपार दया–मेहर हो तो ही हम गुरु की संगत में जाने के बारे में सोचते हैं। आज भी भाई गुरदास जी मनमुख और गुरमुख के विषय को जारी रखेंगे। आप हमें साधारण पत्थर और पारस पत्थर के उदाहरण देकर समझाएंगे:

असटधातु इक धातु होइ सभ को कंचनु आखि वखाणै।
रूप अनूप सरूप होइ मुलि अमुलु पंच परवाणै।

भाई गुरदास जी प्यार से समझाते हैं, ''सन्त–महात्मा इस संसार को सुखों की नगरी बनाने के लिए नहीं आते। सन्त हमसे भक्ति करवाकर परमात्मा से मिलाप करवाने के लिए आते हैं।बहुत से महान सन्त संसार में आए अगर उनका उद्देश्य इस संसार को सुखी बनाने का होता तो यह संसार सुखी हो गया होता।''

पारस छुआने से अष्टधातु सोना बन जाती हैं। हमारी आत्मा पापों के बोझ से दबी हुई है। हम अपनी बुरी आदतों के कारण सर्वशक्तिमान परमात्मा को भूल गए हैं, अपनी मौत को भी भूल गए हैं।

पथरु पारसि परसीऐ पारसु होइ न कुल अभिमाणै।
पाणी अंदरि सटीऐ तड़ भड़ डुबै भार भुलाणै।

पत्थर में अहंकार होता है। चाहे पत्थर को पारस से स्पर्श करवाए अपने अहंकार के कारण पत्थर ही रहता है सोना नहीं बनता। जब पत्थर

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

को पानी में फैंकते हैं तो अहंकार के कारण वह पत्थर पानी की तह में चला जाता है, पानी पर नहीं तैरता।

चित कठोर न भिजई रहै निकोरु घड़ै भंनि जाणै।

पत्थर इतना कठोर होता है कि बहुत समय पानी में रहते हुए भी इसमें पानी की एक बूँद भी नहीं समाती। इसमें केवल एक ही गुण होता है कि यह सुंदर घड़ो को तोड़ देता है। इसी तरह मनमुख भी पत्थर की तरह कठोर होता है वह दूसरों को कष्ट देना और दूसरों के दिल को ठेस लगाना जानता है। उस पर सतगुरु की संगत का कोई असर नहीं होता।

अगी अंदरि फुटि जाइ अहरणि घण अंदरि हेराणै।
साधसंगति गुर सबणु सुणि गुर उपदेस न अंदरि आणै।
कपट सनेहु न होइ धिडाणै, कपट सनेहु न होइ धिडाणै।

पत्थर को आग में डालकर इस पर हथौड़ा चलाएं तो यह आसानी से टूट जाता है अगर पत्थर हृदय–मनमुख, गुरु की संगत में आ भी जाएं तो भी वे गुरु के वचनों को धारण नहीं करते जिस तरह पत्थर सुंदर घड़ों को तोड़ देता है उसी तरह मनमुख दूसरों के लिए अशान्ति पैदा करते हैं।

मनमुख जब कठिनाई में होते हैं तो वे परमात्मा से कहते हैं, ''तूने हमें ये तकलीफ़े क्यों दी?'' मनमुख ऐसा भी कहते हैं, ''हमें परमात्मा के हाथ तोड़ देने चाहिए?'' वे नहीं जानते कि परमात्मा न किसी को सुख देता है न किसी को दुख देता है। हमने जो पहले कर्म किए हैं हम उन्हीं के परिणामस्वरूप सुख–दुख भोगते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

देहधरी का दण्ड सब काहू को होय, ज्ञानी भोगे ज्ञान से अज्ञानी भोगे रोय।

चाहे गुरमुख हो या मनमुख हो कर्मों का भुगतान तो करना ही पड़ता है। गुरमुख मालिक का भाणा मानते हैं, कर्मों का भुगतान खुशी से करते हैं। मनमुख परमात्मा से शिकायत करते हैं, परमात्मा पर पत्थर फैंकते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

माणक मोती मानसरि निरमलु नीरु सथाउ सुहंदा।
हंसु वंसु निहचलमती संगति पंगति साथु बणंदा।
माणक मोती चोग चुगि माणु महितु आनंदु वधंदा।

अब भाई गुरदास जी हंस और कौए का उदाहरण देते हैं कि मानसरोवर में सब हंस मिलकर रहते हैं। मानसरोवर में दूध और पानी मिला होता है। हंस की चोंच में यह गुण होता है कि वह दूध और पानी को अलग कर देता है। मानसरोवर हंसो को खाने के लिए मोती भी देता है। हंस में विवेक बुद्धि होती है वह भले और बुरे का अंतर कर लेता है। गुरमुख को हंस और मनमुख को कौआ कहकर बयान किया गया है।

गुरमुख जब गुरुओं की संगत में जाते हैं वे विवेकबुद्धि से काम लेते हैं और गुरुओ की शिक्षाओं को ग्रहण करते हैं। मनमुख गुरु के पास जाते हैं लेकिन उनकी शिक्षा को ग्रहण नहीं करते। सतसंग सरोवर है गुरु के वचन मोती हैं गुरमुख हंस हैं जो उन मोतियों को चुगते हैं।

महाराज सावन सिंह जी के एक शिष्य चतुरदास जी ने लिखा है, ''महाराज सावन ने मुझे मेरे अंतर में मेरे प्यारे से मिलवाया। जो गुरु की सच्चाई नहीं जान सके वे गुरु की क्या कद्र करेंगे? प्याज के व्यापारियों को कस्तूरी की खुशबू का क्या ज्ञान! खद्दर पहनने वाले रेशमी कम्बल की क्या कद्र जान सकते हैं!''

काउ निथाउ निनाउ है हंसा विचि उदासु होवंदा।
भखु अभखु अभखु भखु वण वण अंदरि भरमि भवंदा।
साधसंगति गुरसबदु सुणि तन अंदरि मनु थिरु न रहंदा।
बजर कपाट न खुल्हे जंदा, बजर कपाट न खुल्हें जंदा।।

कौए के पास रहने की जगह नहीं होती वह इधर–उधर भटकता रहता है। वह खाने की उन चीजों की तलाश करता है जो खाने लायक नहीं

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

होती फिर भी उन चीज़ों को खाकर खुश होता है अगर किसी तरह वह हंसों की संगत में आ जाता है तो उदास हो जाता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हंस मोती की तलाश में होते हैं और कौआ गंदगी की तलाश में होता है अगर कौआ समझदार हो तो वह हंसो की संगत में आने का साहस नहीं करेगा।''

मनमुखों का स्वभाव कौए जैसा होता है। वे पूर्ण गुरु के पास आकर भी फायदा नहीं उठाते 'शब्द' की कद्र नहीं करते। मनमुख उस बज्र किवाड़ को नहीं खोल सकते जिसे ताला लगाकर परमात्मा उसके पीछे बैठा हुआ है। दूसरों की निन्दा करके हम उस दरवाजे को नहीं खोल सकते जिस तरह कौआ इधर–उधर भटकता रहता है उसी तरह मनमुख अपने मन को स्थिर नहीं रख सकते। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खों में चूक। अंधे एक न लग्गी ज्यों बाँस बजाई फूँक।

अगर शिष्य पूर्ण न हो तो सतगुरु का क्या दोष? बाँस में चाहे जितनी हवा डालें वह नहीं रूकेगी अगर शिष्य अपने आपमें सुधार नहीं करता नाम लेने के बाद भी सांसारिक भोगों में लगा रहता है तो वह किस तरह मुक्ति की आशा कर सकता है?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''क्या कोई नाव में पत्थर भरकर नदी से पार जाने की उम्मीद कर सकता है? हम लोग ज़हर भी खाते जाते हैं और हाय–हाय भी करते हैं।''

महाराज कृपाल ने दया करके हमें डायरी रखने का उपदेश दिया। डायरी अपने जीवन का हिसाब–किताब रखने का एक अच्छा रोजनामचा है। मैं अक्सर कहा करता हूँ प्यारेयो! हमें डायरी इस तरीके से रखनी चाहिए कि हम अपनी गलती को न दोहराएं। एक ही गलती जिंदगी बर्बाद कर सकती है। विषय–भोग हमें खोखला कर देते हैं अगर हम सतगुरु का

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दिया हुआ भजन–सिमरन विश्वास और प्यार से करें तो आसानी से इस बीमारी से छुटकारा पा सकते हैं।

रोगी माणसु होइ के फिरदा बाहले वैद पुछंदा।
कचै वैद न जाणनी वेदन दारू रोगी संदा।
होरो दारू रोगु होरु होइ पचाइड़ दुख सहंदा।

इंसानी जामा दुखों और बीमारियों से भरा हुआ है अगर कोई बीमार हो जाए और अच्छे डाक्टर के पास जाकर ईलाज न करवाए तो वह बीमारी से छुटकारा नहीं पा सकता। अगर वह अच्छे डाक्टर के पास जाने की बजाय नीम–हकीम के पास जाता है तो उसकी तकलीफ बढ़ जाएगी। डाक्टर दवाई देते समय कुछ परहेज भी बताता है।

सन्त पूर्ण डाक्टर होते हैं। वे हमारी बीमारी जानते हैं कि कौन सी दवाई हमारे लिए ठीक रहेगी। सन्त हमें 'नाम' की दवाई देते हैं। वह हमें जो करने के लिए कहते हैं हम वह नहीं करते। जब अच्छा डाक्टर आपके घर आता है आपको अच्छी दवाई देता है तो आप ठीक हो जाते हैं। मैंने एक भजन में लिखा है: ***वैद्य बन कृपाल घर आया।***

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हम डाक्टर से दवाई लाकर अलमारी में रख देते हैं और डाक्टर को दोष देते हैं।''

आवै वैदु सुवैदु घरि दारू दसै रोगु लहंदा।
संजमि रहै न खाइ पथु खटा मिठा साउ चखंदा।
दोसु न दारू वैद नो विणु संजमि नित रोगु वधंदा।
कपट सनेही होइ कै साधसंगति विचि आइ बहंदा।
दुरमति दूजै भाइ पचंदा, दुरमति दूजै भाइ पचंदा।।

इसी तरह सतगुरु अच्छे डाक्टर बनकर आते हैं वे 'नाम' की दवाई देते हैं और कई चीज़ों का परहेज भी बताते हैं अगर हम मना की हुई चीज़ों

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

को खाते हैं और पहले की तरह सांसारिक भोगों को भोगते हैं तो फिर डाक्टर या दवाई का क्या दोष? विषयों को भोगने वाले बीमार कहलाते हैं। ऐसे लोग गुरु के पास आकर अपनी समस्याओं की शिकायत करते हैं लेकिन उन्होंने गुरु की दी हुई दवाई से काम नहीं लिया होता।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर आप सचमुच गुरु से प्यार करते हैं तो आप वही करें जो गुरु आपको करने के लिए कहता है।''

सतगुरु ने अपार दया करके हमें नामदान की दवाई दी है। वे बहुत तजुर्बेकार डाक्टर हैं वे हमारी बीमारी को समझते हैं और दवाई भी देते हैं। अब हमारी जिम्मेवारी है कि उन्होंने हमें जो दवाई दी है उसका इस्तेमाल करें और जो परहेज बताया है वह करें। हमें उनसे अच्छा डाक्टर और कोई नहीं मिलेगा। नाम की दवाई लेकर हम मन आत्मा व शरीर की बीमारी को दूर कर सकेंगे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

संसार रोगी नाम दारू, मैल लगे सच बिना।

हर कोई बीमारी में ही जन्मता और बीमारी में ही मरता है। सारा संसार दुखी है। केवल 'नाम' ही दवाई है जिसने नाम की दवाई ली वह बीमारी से मुक्त हो गया।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com